



क. म. सा. ता. य. मा. वे. ल. न. स्त. स. न. क. ना. द. मा. व. ल. जा. न. व. य. ध. के. ज.
क. र. के. न. द. ध. न. ना. नी. य. व. के. ना. द. वि. त. स. म. वि. व. वि. स. स. सि. य.
उ. त. स. व. ज्ञा. त. या. ॥ ॥ मा. ज्ञा. न. धा. न. स. या. जा. न. वा. जा. हा. वा. हा. वा. ना. जा. द. सा. त.
या. य. ध. ना. वा. बु. अ. क. न. हो. जा. व. वा. द. वा. जा. हा. न. जा. व. ना. हा. व. व. क. ॥ वा. जा. स. द. न. द.
रा. मा. व. वा. मा. दा. या. न्वा. थ. न. स. व. य. का. व. र. वा. न. मा. द. य. का. व. वा. हा. ला. या. के. ठा.
ह. मा. ज्ञा. न. म. नि. वा. जा. हा. वि. स. व. ना. स. जा. य. क. भ. व. वा. य. द. वि. दा. व. वा. जा.
न. य. के. य. द. जा. दा. वा. न. म. द. या. व. स. क. ज. ली. दा. व. द. थ. ना. ज्ञा. न. म. कु. न. जा.
हा. न. ग. ज्ञा. व. न. म. व. नि. या. क. थ. ना. ॥ ॥ थ. ना. ज्ञ. य. स. जा. व. नी. भा. न. द. य.

॥ ॥ पृथीन्यास ॥ उं छी वज्र हं हं चक्र हं हं रु ॥ ॥ उं ऊं ४ रु रु हं हं रु ॥ ॥ उं वज्र वे
आचनी ये हं हं रु ॥ ॥ उं सर्ववृद्ध जाकिनी य हं हं रु ॥ ॥ वृद्धा ॥ ॥ उं जाकिनी य
हं हं रु ॥ उं लामा हं हं रु ॥ उं खलु वा हं हं रु ॥ उं प्रणिनी य हं हं रु ॥ उं वज्र क वा
ठ क हं हं रु ॥ उं समय क ला ठ क हं हं रु ॥ उं वि समय क वा ठ क हं हं रु ॥ उं समय वि
समय क वा ठ हं हं रु ॥ ॥ ॥ उं क २ २ च छु हं हं रु ॥ उं क २ २ च छु श्री य हं हं रु
॥ उं वन्ध २ २ लामनी य हं हं रु ॥ उं लामनी २ म लाना स हं हं रु ॥ उं श्री रु य २ वि व म नी ४
य हं हं रु ॥ उं ऊं २ खर्व वा य हं हं रु ॥ उं ऊं २ च क छ व नी य हं हं रु ॥ उं रु २ ऊ म च्छाय

[illegible]

सूर्य ॥ ॐ इति नाम सूर्य ॥ ॐ सुकला सूर्य ॥ ॐ यमजरी यूर्य ॥ ॐ यमदू
 गी यूर्य ॥ ॐ यमद्विषी यूर्य ॥ ॐ यममथनी यूर्य ॥ ॥ ॐ यमनाय यूर्य
 ॥ ॐ गङ्गा यूर्य ॥ ॐ काला कला यूर्य ॥ ॐ कैलीकतिषला यूर्य ॥ ॐ ग
 ढहलसा यूर्य ॥ ॐ लक्ष्मीवर्धकनासना यूर्य ॥ ॐ दालान्धका यूर्य ॥ ॐ कि
 लिकया यूर्य ॥ ॥ यस्मै यस्मै नमः ॥ ॥ ॐ वज्रसत्त्वसगुणार्मकै वज्रवत्स
 लार्मकै वज्रधर्मगयायनी वज्रकर्मकवाठकै ॥ लाया ॥ ॐ वज्रवत्सलै ॥ ॐ वज्रव
 लायी ॥ ॐ वज्रमृदै ॥ ॐ वज्रमृदु ॥ ॐ वज्रहासकै ॥ ॐ वज्रमालाया ॥ ॐ व

उगीतं डो॥ उं वज्र नृत्तम् ॥ उं वज्र पूष्यं ॥ उं वज्र धूयं ॥ उं वज्र दीप्यं ॥ उं व
ज्र श्रुत्तम् ॥ उं वज्र दक्षिणं ॥ उं वज्र सवर्णं ॥ उं वज्र वज्रं ॥ उं धर्म वज्रम् ॥ ॥
नमस्तु नमामि नमो नमो ॥ स्वाहा वज्र स्वाहा वज्र ॥ ॥ सुनि ॥ ॥ सर्वज्ञान
सन्दाह उगदर्थ प्रसाद के ॥ चिन्तामणि विवाङ्मुखा श्रीसम्पन्न नमो सुनि ॥ ॥ नमः ॥
उं नमो रत्न वनं वीरसा यदं १२० ॥ उं म हा कल्याणि सी निहा यदं १२० ॥ उं उगम वृद्धी
रुणयदं १२० ॥ उं उगु कवा लाघु तीषम रवा यदं १२० ॥ उं सद सुगुजला स्वयाः
यदं १२० ॥ उं पत्र गुया सोयतम खट्वा विदं १२० ॥ उं वाङ्मुखा निम्न धवा

यहं २२५॥ उं मरु धूमान्धका च व पूषा यहं २२५॥ ॥ ॐ ह्यगि या न ॥ अटि ति छु
न्या नानन न यं यं लं वं हं हं निया न वि छव व ड व ल न कं कं का या व पि कू ठी न म जं य नु
य मं य नु द्यो यं य नु सा य न म धि तं हा या ह हा य सै सा रै किं कि नि जा ल नु वि गै ख चि कि
व ड य ल सु द्यो य नि रू हं सै धि व क म् क म् म हा व ड क र्म सि र्ष तु य न् न नि च धु य ता
य सै सा रै य म या दि वि रु धि तै ॥ न द्र प चि रं का य य चि न तं वि छव य न म वू द ल कू धि
की कं हा या नि तं न द्र प चि आ लि का लि दि छु न न च लु कं सूर्यो म धु लं त सा य वि
आ धा या ध म धु ल सु धी रु च क स मा धु ल यै वि ला य ॥ न त्स र्व ह्य न स त्वा दि ति र्ग

वज्रमन्त्राय नमः ॥ वं चैव चालपूजा ॥ ॥ आद्रुति ॥ स्वस्ति वाक् ॥ ॐ ॥
नयदीया दीया विद्या विषमहाष्टीयरुवाकवावरुनाय ॥ इति मानसपूर्व
कुरुं स्वाहा ॥ मन्त्र ॥ ॥ वं : ला : सु ॥ ॐ ति पुथमाद्रुति ॥ ॥ ततो ह्यनाद्रुति
॥ ॥ ॥ च चूसाधना ॥ होमाग्निर्नैव विधिना च चूर्कयसाध ॥ श्रीवाचसुरवधुमः
धरुनितयूक ॥ अलि ॥ यक्षमृतपुगियाय ससिद्धिमन्त्रं देमादियाय निहितपु
गियादनीय ॥ ॥ ॐ वं ॥ ॐ जिं रवं ॥ ॐ दिवान्न ध्यानपीन ॥ स्वाहा ॥ ॐ ति च च
साधना ॥ ॥ ततो वं च चमनादिकैकृत्वा ॥ लाको रं च ह्यनाग्निविलया ॥ ॥

लाका लाः नो य द्वाः न्न हृदि कमत्र च न्द्रासनोपविमधुलाधिविनिवीजनिस्थाः
नयिद्गुवीजपविधामेनमधुलाधिविति समाधुलेयवितावाज्ञानसत्त्वचक्रवजा
कृष्णादिरियाकृष्णपुवेष्ययद्वासनायां नीलमिव समप्रसृतं स देहकीकृ
त्वा अरिषिवायो कृष्णवर्षाद्यावमनादिके पूजास्तुतिपर्यान्तकृत्वा श्रुयाया
॥ ॥ देहविधाना ॥ आः पाः आः थोः अः ध्रुवः पूषा न्याहा ॥ दिगववि पूजाः यैः
लाः सुः ॥ स्वाविहिद्वयः मूलमकुन चन्द्रय ॥ हृदयमकुन ॥ ॥ आकृतिया
या ॥ स्वस्ति वाक् ॥ ईं अः न्नयादि ॥ कृत्वा यातामा लकविया ॥ ॥ यैः यैः लाः सु

ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते ॥ ॥ धनं देव पुनित्वा दत्तं सा दद्यात्कर्म दद्यात्निविधि ॥ ॥ देवताः
कृतिया या ॥ ननु हे सर्वदेवामी मधुर्लपयमा कुत ॥ असनाय दस दज ॥ सुजाया
नमो कयेन ॥ मनुम दसमायूका वज्रं कृष्णदिया वागमिति तत्तु टर्किना च्छा
य ह्रीं नवद्वि समा कयेन ॥ ॥ ननु देवचर्म ध्यानं तस्मान्न वक्तु वेदता नाः
हिमध्वस्त्रितीयं ॐ नमो दित देवता शायन चन्द्रा कर्म ध्वस्तु वीज उडका
यसं म्बु नानाद विन्दु कलातीत यस्त्वैवाधि ह्रीं नाना विनू ॥ उँ देवता ह्रीं निमुरेव
वीज कायेन यव रु लपमाने ॐ कृ वज्रं विता वा ॥ जान्ता न क्व च ॐ वनवद्वि

मरुतवद्विष्टताद्रुमिदशात्॥ ॐ स्वार्थसिद्धिदोवद्विष्टमकिंदासुषुदेवतागताव
कर्मात्तत्रयेष्टस्त्रयश्च॥ न्यादिकत्रयत्॥ पायिष्ठस्त्रयवापायत्तत्रुष्ट॥ ५
द्वयतावमात्ततोविनिर्गतामर्षिर्महाज्ञानामृतंमर्त॥ तन्नसक्त्यदेवानी
नत्समैसचलाचलेनवकत्रातियाहोमसिद्धिसोताव्यसम्यदे॥ प्रिसर्केक
विद्याद्यादिद्यावचचद्रुकाटिहास्त्रुकासिद्धिनसात्रेष्टमकुतकुादितामठ
तै॥ मरुतवसर्वोद्रुमिचिन्हाविहिसर्वादितावनाचचसर्वपलायाचरुडका
लाकलिगानल॥ ॥ देवताध्यान॥ आःधूःपाःपूः॥ विहिसर्वाःसख्याइ

नतो

गिर्याया॥ देवनाद्रुगिर्याया॥ हस्तिवाक्॥ ॐ अ॥ छन्त्यादि॥ ॥ ॥ यैः लाः मुः
 वृ० गिरिदेवनाद्रुगिरिविधि॥ ॥ गतोपूर्वद्रुगिर्याया॥ वृ० गिरिदिनकहोमविधा
 ना॥ ॥ पूर्वद्रुगिरि॥ आः प्रोः पाः आः अः धूपः क्वाविदिद्वय॥ चन्द्रद्वय॥ पू०
 ह्मसिद्वय॥ ॥ ॐ समाधिरुले जै स्वाहा॥ जीवील॥ ॥ ॐ आ० ह्म० (०) सिर्व
 गिरिक० विरुष० (०) ह्म० स्वाहा॥ धीरवधु॥ ॥ ॐ वज्रवाससे स्वाहा॥ अजम॥ ॥
 ॐ धर्मा धर्म याज दह २ सर्वविषय ० मन्त्रिक पूजा स्वाहा॥ चन्दन ० ॥ ॐ आ०
 वज्र धूप स्वाहा॥ धूनी॥ ॥ ॐ सूर्यो सुकूलवलेन जाज पूरि कूर स्वाहा॥

पद्माक्षय ॥ ॥ उँ ठाण छे म म ध वि लो कि न तं तं जा जा जा य पू वि कू नू रू रू दू ला
हू ॥ वा य ॥ ॥ उँ व ज न म् वा य स्ता हा ॥ न म् वा ॥ ॥ उँ व ज पि य रु मा य स्ताः
हू ॥ पि यी छु ॥ ॥ उँ स र्व प्र ण य सै म ना य स्ता हा ॥ स र्व व धि ॥ ॥ उँ स र्व कृ ष्ण य
क ण य स म ना य स्ता हा ॥ य क्षो व धि ॥ ॥ उँ रि का य क य स दो ष ना स ने स्ता हा ॥
प्रि क दू ॥ ॥ उँ रि रु ल रु ल ने स्ता हा ॥ रि रु ल ॥ ॥ उँ म द ना य स्ता हा ॥ म द न
रू ला ॥ ॥ उँ व ज वै षा क या य स्ता हा ॥ वै कू म ॥ ॥ उँ व ज वी जा य स्ता हा ॥ स म क
॥ ॥ उँ व ज म द य रू स्ता हा ॥ य न के षा ल ॥ ॥ उँ सूर य स्ता हा ॥ य न्ना ग रु ल

ॐ दह २ हं रु द्वा हा ॥ शि हा स ॥ ॥ ॐ समय आत्रय स्वा हा ॥ अ ३ हा ॥ ॥ ॐ सु ४
समय आत्रय स्वा हा ॥ क ५ हा ॥ ॥ ॐ कमि धनि सर्व सिद्धि करुं डी स्वा हा ॥ नः
कनीय ॥ ॥ ॐ करु २ सर्व कार्य सिद्धि म देवाय स्वा हा ॥ न क च न्य न ॥ ॥ ॐ वज्र द
र्शन रु ले र्ज स्वा हा ॥ को ल रु ल ॥ ॥ ॐ वज्र प्र से स्वा हा ॥ वय य ॥ ॥ ॐ सर्व गो र
जाय स्वा हा ॥ नृ प क षा त्र ॥ ॥ ॐ वजा य र्व स्वा हा ॥ इ र्वा क रु ॥ ॥ ॐ वज्र पि षु का या
य स्वा हा ॥ वि षु का ॥ ॥ ॐ रु न्ध म ला य स्वा हा ॥ रु न्ध ॥ ॥ ॐ आ ४ हं स्वा हा ॥ मू ला दि
॥ ॥ ॐ वजा लो क डी स्वा हा ॥ म ना ॥ ॥ ॐ वि हि द्य या ॥ च नू द्य या ॥ ॥ यू न्ना इ ति ॥ मः

ॐ आ ४ रु वा नु क स वा नु ऊ र्ग णि षा नु ऊ र्ग रु रू स्वा हा ॥ ॥ म हा वा क ॥ ॐ अ या दि ॥ ॥
अ न न तु वि ता व जी, ह्मा न व द्धि य र्ग क य । ॥ ४ ॥ ४ ॥ ता दि जि नं तु मू, तु क चा मि व त्रा यः
ति ॥ ४ ॥ ४ ॥ क म रु ह व न, वि र्ग वा य म हा व न । का म दे द रु वि (४) व च लु सूर्य ग य य
हा ॥ ४ ॥ ४ ॥ थि पा स ध न (४) व, क वा ल क प न स थ ॥ ४ ॥ ४ ॥ या जा च ना ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ग न्ध स च कि
न न ॥ ४ ॥ ४ ॥ या य रिं ण ति दे वा ष ॥ ४ ॥ ४ ॥ अ क नि षा नि वा सी नी ॥ ४ ॥ ४ ॥ म हा या जा स्ति ता य च, नि र्वा न व
हा व र्हि ण ॥ ४ ॥ ४ ॥ नि र्वा ण च ति दे वा ष ॥ ४ ॥ ४ ॥ तु धा वा सा य ण ॥ ४ ॥ ४ ॥ मा य ति या क धा तु च, व ४
४ धा तु नि र्वा स नी ॥ ४ ॥ ४ ॥ च तु दि य स्ति ता स त्वा, स्ति ता य च रि धा तु के ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ न स त्वा च ४

धूपवाक् ॥ धूपदाना ॥ आकर्षण ॥ ॐ आ ॥ कृष्णवर्जो कृष्णवीजमाकर्षयत् ॥ ॐ वज्रपा ॥
हावीगावयद् ॥ ॐ वज्रमेव वीजमाकर्षयत् ॥ ॐ वज्रावहावीजगावयद् ॥ ॥
ॐ कालसावमहात्मै ह्यस्य सचयुवस्मिन्महात्मा द्विधविन्यसच तस्मै नमः प्रमद्व
यी ॥ ॥ स्नानश्रोमिरी ॥ सतावसमिधस्तनमस्तु यस्तु नयस्तु नयस्तु नयस्तु ॥ स्नानाब्जि ॥
श्रोमिरी ॥ इत्युदरुतिपायानि दिव्यमोक्षप्रदायकं ॥ आयायनो युगावापि ॥
प्रिविष्मश्चैव धनतु ॥ तस्य देयप्रमत्तान् तस्मान्नवद्वयदता ॥ नाहिमश्चहिरी
वद्मै ॥ ॐ आद्यादिदेवता ॥ यस्तु चतुर्कर्म ॥ वीज ॐ कावसीहवीजनादविन्दुः ॥

जातीती वाधिहानानवाधि॥ ॥ उँ अन्नयदीयादीयाविषाविषमहाधियदयाः
कवावाहनायदृष्टमन्त्ररूँवैहो॥ समयस्तमिति॥ ॥ निलाउहना॥ वलि॥ इकावः
मरवे॥ ॥ उँ डो आ वमनीपुच्छ॥ स्वाहा॥ ॥ उँ आ॥ विज्ञानककुत्सर्ववापविघ्नमात्रानुरक्षी
कुरु॥ ॥ उँ आ॥ विज्ञानककुत्सर्वक्रेष्मन्तिकुरु॥ रुद्र॥ स्वाहा॥ ॥ उँ आ॥
विज्ञानककुत्सर्ववज्रमलानपतये॥ रुद्र॥ स्वाहा॥ ॥ उँ आ॥ विज्ञानककुत्सर्वपू॥
धर्मज्ञानसीतायानुरोक्तये॥ रुद्र॥ ॥ उँ सर्वतथागतकाराविघ्नधन॥ स्वाहा॥
यस्कसुगन्धना॥ ॥ आनति॥ ॥ उँ आ॥ दीकल्या॥ स्वादि॥ ॥ मश्चि॥ स्वादि॥ ॥ ॥ उँ रुद्र॥

ववजवन्धुं॥ देवजामसुखा॥ धावता॥ ॥ कृष्णसना॥ दे० मेम हावृष्णदि
वापविशवृक्षदेवता॥ ४०६॥ धर्मसंघवता॥ ४०७॥ धितीजामदलागहा॥ ४०८॥ सर्वविश्व
हमनिकुवन्तुसिस्तारु॥ ४०९॥ सिमाने॥ वृक्षध्यायाकुसर्वसुदन्तिधसूतादेवताः
मयसन्नावृक्षशालोकपालासूतदीवताहि॥ ४१०॥ धामनाकल्याधविनास॥
कलजनपदिशाधवृक्षार्थनायपूजागृह्णन्तुधामनिविधदुययताश्रयजोगरु
यर्ह॥ ॥ पादातयस्त्रितैविशापादादेवितयैमयाग्रासूतलीजस्रदेवुजावृ
क्षोयथागर्भ॥ महातयकाइन्तुयुद्धदे० वावसातयैगयातायकटिद० वाव

सयमपविर्काहिती॥ तू लोका न्नारे द (ता) तु तू वला को द ल सु था। स लो को य रु
स स ल स ल लो को तु व रु सि॥ इन लो के क धु दे (ता) त प लो के ल ला ठ रु। स ल लो
के य म रु सि ल तू व ना नि च तु द्द हा॥ ॥ आ पा यै ला मु॥ दि ग य जा॥ ॐ नु दि
आ वा रु न मू जा॥ डं न मा व ज सा च दि णि श व ज या क्ष य रु श स्वा रु॥ प र्व॥ डं न अ दि क
पि ल क ल श द रु णि रि ता लि वि य पा रु स्वा रु॥ आ ण॥ डं य मा य स्वा रु॥ या म॥ डं स
व रु त रु यै क य रु रु श स्वा रु॥ न अ रु॥ डं रु श पू ठ रु श णि रि ता लि वि य पा रु स्वा रु
रु॥ व रु ध॥ डं स स रु ख रु रु रु श स्वा रु॥ वा य रु॥ डं ध ना धि ग म न दा य आ ग रु रु रु रु

गानमापर्याह्तिने॥ याचनादिविशासहिनेचक्रुधउपनाकावमुवादिगुणीनन
रापरायेकमादिरि४कलकीधालयावकीनावाधिविरुमनपूर्वकल७१४ठिषी
पद्मानिसहसमहिरिषियामानेयवजादिरि४अयनीयमानेमेठालीगीनिरि४अरि
वेकेमहावजीविधातुकेनमस्तुतेददामि सर्ववृद्धानीतिगुआलयसमरुवै४॥ उंस
वैतथागतसमयति॥ ॥ वृद्धनेसर्ववृद्धानीतिधातुकेनमस्तुतेयखाकेपूजना४
थयमकूटपर्वकलाहवी॥ उंसर्ववृद्धचूगामसिमकूटपुतिचुल्लाहा॥ मकूटनेया॥
॥ ॥ उंसर्ववृद्धनीतिअरिषिचक्रु॥ उंसर्ववृद्धनीतिअरिषिचक्रु॥ उंसर्ववृद्धनीतिअरि

शिवि चरुगों॥ उँ धर्म वडी अरिषि चरु डों॥ उँ कर्म वडी अरिषि चरु अ॥ उँ उदक
मकूट वज्र वधु नामा रिवि काय चरु अरिषा का॥ उँ वचरु वृद्ध र हाच काय वज्र पूषी प
नि च्छु स्वाहा॥ पूषी न्यास॥ उँ आ॥ आ॥ आ॥ यो वै वाचनाय वज्र पूषी प नि च्छु स्वाहा॥ उँ आ॥
आ॥ यो अ॥ श्री॥ ला॥ य वज्र x॥ उँ आ॥ आ॥ न॥ ल॥ स॥ म॥ वा॥ य वज्र x॥ उँ आ॥ आ॥ यो अ॥ मि॥ ना॥ रा॥
य वज्र x॥ उँ आ॥ आ॥ यो अ॥ मी॥ व॥ सि॥ ह॥ य वज्र x॥ उँ आ॥ यो वा॥ च॥ ना॥ य वज्र x॥ उँ आ॥ यो
मा॥ म॥ कि॥ य वज्र x॥ उँ आ॥ यो पा॥ ल॥ ला॥ य वज्र x॥ उँ आ॥ यो ता॥ वा॥ यो वज्र x॥ च॥ स॥ स॥ व॥ हा॥ च॥ प॥
जा॥ ॥ ला॥ ध्या॥ मु॥ नि॥ वा॥ च॥ ना॥ दि॥ वि॥ श्या॥ य॥ तु॥ द॥ वि॥ ष्म॥ ह॥ व॥ ता॥ दि॥ त॥ थ॥ ण॥ ना॥ स॥ म्ब॥ ह॥ व॥

द्विमादाय वन्दे जागरु वसुधा ॥ वृंतिमकृतयो ग ॥ ॥ निलैशुमालिके त्वाया रूप
कुर्यात्समाहित ॥ सूत्र तै ह्ययया (गनस उरपे तानु मरुमी ॥ कल्पयथिलविकन वजा
वार्या देमहात्मना अउमु रावना त्यासा सिद्धान्त कोनस सय ॥ वजस त्वमा लात्मल ॥
मनु यपि उयेत ॥ अरुच काचन चू सादि अमरु विष्णु अगति अउ सिष अलि कु सि
मे विजा वृंति सा चू उं पद २ म हा ह्मा नी सर्व द मरुत व ॥ हं ३ हो ३ अत्ता हा ॥ डी थी व ज
३ च ३ के हं ३ रु ५ ॥ आप धूप पादार्घ्य पूषा न्यास ॥ लाञ्छा मुति ॥ वृंति नृति य जाय यो ४
ग ॥ ॥ नता वलियो ग ॥ यं का च लं वा यम तु लं धन्वा रं नील वर्ध च यना कार्कि नै न

इयविचंकाप्रधमिभुले, ठिकोसचकवर्धूका लाकिनीनदपत्रिककाचनप्रिम
हुकयाचंआकाचसपमलाउरने, नगुह क्कदिके॥ उँरूँगोँडोखँचामाँपाँताँकाचउत
दधिषिगयक्षमृनयक्षप्रदीपयूयसनिषाश्रवायूयत्रिपक्षविवाग्नितायविलिन
बीजाक्षयादिके, महिनवतानरुद्धवयूयदृष्टुनगुणाचदवर्धूँरवअध्वरूँकाचान
नूकमेधाययूयविस्मितानू॥ उँआ॥ ४०॥ काचाननूकमेधाययूयविस्मितानू॥ न॥ ४१॥
सूटिनयस्मिनाददसदिब्बहिंवीचव्वीसीह्मनामतेप्रदीपसंक्रमसवायनप्रिच
केमाकृष्यजगदर्थकाचयित्वासमापहिपूर्वके॥ पादार्थ॥ पृथग्या॥ चलागुदि

यत्स्य पचाय पूजा ॥ लाङ्का ॥ मुनि ॥ अलिकालि वलित वलुस्य सहाव कच ४४
यान्ते रूका च दृष्टु ॥ उँ अन्तो न्या नगता ४ सर्व धर्मा अर्थ ह्या नगता य विष्णु सर्व ध
र्मा ४ रू ॥ दिवेषु माने समययमाने तद्वय वाच वनपुमाने यतन सतन दिवन महा
हता ॥ अँति वलि मडा ॥ ॥ उँ कच २ कच २ वन्ध २ गाय २ कोरय २ डौ २ डरू २
रू २ दरू २ पच २ हक २ वस २ चि चान्क मा ला वली विन्य २ छु चारु वि यरू रू २ ॥
गृह २ सफ पाता लहा ननु डं ग सय वात डूय २ आकडू २ डौ रू २ डौ २ हौ २ डौ २ रू
२ किलि २ सिचि २ चिचि २ चिचि २ रू २ ॥ उँ वजा वलि हा ४ ड ४ रू वं हा डो ४ व ड ४

[illegible]

पतिषु दशमं तव सुता सोमं तव अनन्य कामं तव सुता सोमं तव सर्वसिद्धिमेव यच्छ
सर्वकर्मसु च मन्त्रिर्ह (७) यः कश्चिद् रुद्र रुद्रोऽहं तव वनवज्रं दूकमा मम सुकुरु च ४
कोरु माहात्म्यं सत्यं सत्यं ४ रुद्र ५॥ उवजममुलम ॥ ॥ ॐ नमि वि सङ्ग न ॥ ॥
संक्रिय चक्रं संवत्समिति ॥ ॥ ७३८ ॥ ॥ उ नमः ४ श्री वज्रसलया ॥ सूर्यो वा ॥ गुप्
या दार्घ्यं ॥ पूजां यो ययं के ॥ वीर्यं गवा ॥ धनं याय ॥ पञ्च गवा विय ॥ गुप् मं तुल
सिन्धु च पूजा ॥ शिसमाधी देवु श्रीत गो कलेष्म च व ॥ ध्यान ॥ उवजामृगो दकथं रुद्र ॥
तपे २ म हातपे स्त्रा रु ॥ मन्दाकीनी जल लूयं विहावे ॥ म नी ठी वं का च ऊं पत्रिन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नै नाना यत्न मयी कव ही मा का च उ छु क ध मा द या न य ह वि ला वा ॥ न द न र स
वी उ ची क्ता य वि ना म म स ह दे व ता वि वि र य ह ह वी ज म य र वी क (ही हान स स
मा नि य पू र गो ह ष्ट पा या च म ना दि के क ला द या तू ॥ न च स म य स ह पु वे (ही म
हा रा ग ड वि रु य वा धी चि रु य पा म न ह न यी के ॥ चि ह्न च स म य द व ता हान द
व न यी की रु ना चि न य तू ॥ उ स र्व न थ ग न म ला यो (ग ह वी हं ॥ धा य न ॥ उ व ज
य हं ॥ धा य ॥ नि वा ज न ॥ उ आ च ज य क स र्व या प वी स म या न ह सि क्क च हं रु
॥ सी व ज न ॥ उ आ व ज क र्म स र्व के (हा पु के हा हा नी क्क च हं रु ॥ ज य स सी

काष्ठ लना गुचम कुक्षया मृदिता समिलिता यच्च विमया याचमनी निमित्ता
न सा चलाया कृता स्मृता धर्मम धानूना यच्च ॥ इज्याया गता छय्य अर्चमनि पस
ल्लिता न इव गमाध्यया फाष्ठ पृथक् चिनिवासनी ॥ अति मृषिल्लिता सता सा धू
न निमित्ता यच्च दद्यात् समिष्ठवस्तु ॥ जाष्ठ गपूठाय च ॥ सम्वद्वा कृष्टवका ल्प
वस्व इव कानन रूपानि ॥ यत न च कते जष्ठ दद्यात् स च न क्रवका ॥ यिनी गता समवी धान
न गे गद्या यस्तु महेली ॥ दानपति ॥ स्वस्ति वा क ॥ ६० ॥ नित्यं कृत्वा विधिसपूर्व ॥ अत्र
दानपति जजमान च पाशा गोत्रया वज्रा ज्ञा इ धी तत्रा ज सिंघना ज पून सिंघना ज

कैरु कि जयमखनथसाकलदयकोइया॥ लिखितथथतादाययाचक्रमहा
विहारा लिखितै वजाचा ईथकसिठनयास्यवियाइया॥ सैम्ब ७२०१ मिति
७वादि १० थसरुनिसिधमिति॥ जांघू पूरुके दत्ताता द वैत्रिपिनीमया जदिसंघ
मछे (अवा) लेखक दो बनासि॥ ॥ ७३ ॥ ससु सर्वदाकल्याण॥ ७४ ॥

१३ लभा वसुधायै॥ सुग्राघ गुरु मधुल सिधु लपुडा दे गुरलि
४० कल सन्या गुरु॥ देवपुडा दाव लाकरवन् ध्ये निजात्र सजा
न्यावक॥ सीत सिधुन रुद्र स्नानकाय मताविय उतयाय॥

३६॥ मा॥ ॥ धाम्नि यनि गुरु मधु ल दान के ओ क वा न व ली
वि स ज न ४॥ धामा न ध म ॥ सा न ध म ॥ सा न ध म ॥ सा न ध म ॥ सा न ध म ॥
ध क स म र नु वा चा गुं ता व म धु ल म र्क म ॥ सर्व ता धा ग ता धा न ॥ सर्व
ता धा ग ता ल य ॥ सर्व ध म ॥ गु ने या त्मा ॥ द धा म धु ल म र्क म ॥ सर्व ल
क स म धु ल ॥ सु वा ल क न व त्रि न ॥ स म न्क र द्रु का या गुं ता व म ॥
ल म र्क म ॥ सर्व स न्क म ता वि र्क ॥ सु क यु की ति नि मि त्त ॥ स म न्क र
द्रु सि ला गुं धा व म धु ल म र्क म ॥ ॥ द्वा क्ता न्क क्ता न्क म धु ल

तय ॥ ॐ ॥ य क लि ध न क वि ध न क पि ॥ भू ग यु ग यु कं स्वा दा ॥ म
धु ल स सि धु ल त य के ॥ ॐ ॥ ग्राम सा ल क्री त नि वा ण नि य स्म
दा ॥ ॥ द सा के ण न र वं का न ॥ का य के तु वि धी वा र्य वा वि के तु
य तु वि धी न्मा न सं त्रि य का जं य ॥ द ष म के ण न ० ति स्म त ॥ ८
॥ का य स पि ल या दा या व च्छु कि न या नि स्मा य म तं ॥ भ व या द्रि व
का य म तं ॥ भ व या व म्भु जा र य दा ॥ का य म तं ॥ का स ग य
ल न ध म त व ॥ ॐ ॥ ता का य स लि ले न या दा या व ॥ २ ॥ ह न व य न

मादायायकुंरुसखाद्वायमतवभवयताकाकवरनद्वायमत
ववजमिउरुयमतउभवरखायमतवथयतावरननयादा
याय॥॥मनसानयादायायकुंरुनसनेधकाआयुमरव४
स्नानसेनमतिउभुयायाजयायमतवमिरवानवाहागुनिम
खादाधममतवभवकाखावाखायादावत्वाकमतवथ
यतामनसानयादायाय॥थुद्रितायायतावतिमानधकंठरइ
स्नादकेवा॥॥हनमद्योनसवनवमतवजाहानयमतव